अथर्ववेद में आयुर्वेद

बीज शब्द : अथर्ववेद, आयुर्वेद, पारंपरिक चिकित्सा पद्धति।

ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net

A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research

शोध संचयन

उत्तर वैदिक काल में चिकित्सकों को विभिन्न रोगों के औषधियों के बारे में समुचित ज्ञान था, वे मंत्र चिकित्सा के साथ-साथ संयमित जीवन पर भी बल देते थे। प्रस्तुत शोध लेख में शोधार्थी ने अथर्वेद में द्रष्टव्य आयुर्वेद ढंग से विश्लेषण किया है।

डॉ. विष्णु प्रसाद शर्मा
सहायक आचार्य (इतिहास विभाग)
परिष्कार कॉलेज आफॅ ग्लोबल एक्सीलेंस
जयपुर।

वेद विश्व का प्राचीनतम साहित्य है। मानव सभ्यता एवं संस्कृति के अभ्युदय, विकास एवं पतन का ज्ञान वेद में ही निहित है। वेद की संख्या चार हैं। - 1. ऋग्वेद, 2. यजुर्वेद, 3. सामवेद, 4. अथर्ववेद। इस शोध पत्र में अथर्ववेद में द्रष्टव्य आयुर्वेद चिकित्सा के विभिन्न स्वरूपों की विवेचना करने से पूर्व इसका परिचय देना उपयुक्त है। अथर्ववेद में अनेक ऋषियों के मंत्र संकलित हैं तथा अनेक विषयों का प्रतिपादन है, अत: इसके अनेक नाम पड़े जो इस प्रकार हैं- 1. अथर्ववेद, 2. आंगिरस वेद, 3. अथर्वांगिरस वेद, 4. ब्रह्मवेद, 5. भृग्वंगिरोवेद, 6. क्षत्रवेद, 7. भैषज्य वेद, 8. छन्दोवेद, 9. महीवेद।[1] महर्षि पंतजलि ने महाभाष्य में 'नवद्याखखथर्वणोवेद:' कहकर अथर्ववेद की 9 शाखाओं का उल्लेख किया है। सायण की अथर्ववेद-भाष्य-भूमिका में भी 9 शाखाओं का मिलता है। ये शाखाऐं हैं- 1. पैप्पलाद, 2. तौद, 3. मौद, 4. शौनकीय, 5. जाजल, 6. जलद, 7. ब्रह्मवद, 8. देवदर्श, 9. चारणवैद्य।[2] इसमें 20 कांड, 730 सूक्त एवं 5987 मंत्र हैं। अथर्ववेद के पाँच उपवेद (सर्पवेद, पिशाचवेद, असुरवेद, इतिहास वेद, पुराणवेद) गोपथ ब्राह्मण में उल्लिखित हैं।[3]

अथर्ववेद में वर्णित आयुर्वेद के कतिपय सन्दर्भ संकेत रूप में प्रस्तुत है- शरीर के अंग (2.33.1 से 7, 20.96.17 से 23), रोगों के नाम (9.8), जल चिकित्सा (4.4.5), ज्वर, यक्ष्मा, खाँसी, कुष्ठ, हृदयरोग, क्षेत्रीय रोगों की चिकित्सा (1. 12/1.22.1, 1.25, 6.96, 6.105 आदि) सूर्य-किरण-चिकित्सा (9.8.22), मृत-चिकित्सा 92.3.4), हस्तस्पर्श चिकित्सा (4.13.6 और 7), रसायन विज्ञान (2.29.1), वनस्पति विज्ञान (10.8. 31), विविधमणियों से रोगनाशन (कांड 19), वाजीकरण (4. 4, 6.101), नारी-सुखप्रसूति (1.11), बंधायात्व-नाशन और पुत्र प्राप्ति (3.23)। प्रारम्भिक काल में आयुर्वेद का अधिक विकास नहीं हुआ, क्योंकि उस समय मानव आखेटक और पशुपालक था परन्तु कालान्तर में मानव ने विकास किया और भावी जीवन को संवारने के लिए प्रत्येक क्षेत्र में ज्ञानार्जन में जुट गया, जिसका वर्णन उत्तरवैदिक साहित्य में मिलता है।

अथर्ववेद में एक मंत्र आता है जिससे पता चलता है कि उस काल में भी सैकड़ों चिकित्सक थे और औषधियों से व्याधियों का उपचार करने हेतु एक सुसम्पन्न भैषज-संहिता विद्यमान थी[4] अथर्ववेद में स्वस्त्ययन, बलि, मंगल, होम, नियम, प्रायश्चित उपवास और मंत्रों द्वारा चिकित्सा का निरूपण किया गया है।[5] उत्तरवैदिक काल में चिकित्सकों को विभिन्न रोगों की औषधियों के बारे में समुचित ज्ञान था, परन्तु रोगों के उपचार में

ऋग्वैदिक कालीन पद्धतियों के अलावा संयमित जीवन जीने पर बल दिया जाता था। इसके अलावा मंत्र चिकित्सा का भी प्रचलन था जिसकी पुष्टि पी. वी. काणे के धर्मशास्त्र इतिहास से होती है। उन्होंने उल्लेख किया है कि नींद लाने वाला मंत्र ऋग्वेद (7/55/5-8) में आया है। ये मंत्र अथर्ववेद में भी उल्लिखित है और संभवत: यह मंत्र पुरोहित द्वारा उस भद्र व्यक्ति के लिए कहा जाता है जो अनिद्रा से रूग्ण रहता है।[6] आयुर्वेद में तंत्र-मंत्र के प्रचलन के कारण ही इसकी विश्वसनीयता को पाश्चात्य विद्वान स्वीकार नहीं करते हैं जो उनके संकीर्ण दृष्टिकोण के कारण हैं। आयुर्वेद पद्धति पूर्णत: तंत्र-मंत्र पर ही आधरित नहीं है इसमें बहुत सारे सिद्ध-योगों का वर्णन है जिनसे घातक रोगों का उपचार किया जाता है। जिसकी पुष्टि चरक संहिता एवं सुश्रुत संहिता से होती है। अथर्ववेद में न केवल रोगों के निदान एवं औषधियों की ही जानकारी मिलती है, अपितु मानव शरीर रचना का भी विस्तृत विवेचन द्रष्टव्य है। अथर्ववेद के मंत्रों के रचयिताओं को उन शारीरिक अंगों की जानकारी थी जिनका उल्लेख परवर्ती आयुर्वेद संहिताओं (चरक, सुश्रुत) में मिलता है। शरीर की रचना अथर्ववेद के कवि को चकित कर देती है, उसे वैसे ही चकित करती है, जैसे संसार की रचना उसे आकर्षित करती है। शरीर और संसार के प्रति आश्चर्य का भाव है, साथ ही बहुत बड़ा आकर्षण भी है। वैदिक इंडेक्स में अंगों की गिनती वाले जिन सूत्रें का हवाला दिया गया है मनुष्य की एड़ियाँ किसने बनाई? किसने मांस भर दिया? किसने टखने बनाये? किसने सुंदर अंगुलियाँ बनाई? किसने इन्द्रियों के सुराख बनाये? किसने पाँव के तलवे जोड़ दिये? बीच में कौन आधार देता है?[7] इससे स्पष्ट होता है कि इस काल के मनीषियों ने मानव के शारीरिक अंगों के बारे में विस्तृत जानकारी जुटाने का प्रयास किया है, जिसके पीछे मुख्य उद्देश्य यही जान पड़ता है कि रोगों का निदान करने में वैद्यों को आसानी रहे, जिससे उनका उपचार किया जा सके।

वैदिक कालीन मानव का जीवन वनस्पतिमय रहा है। मानव अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति उन्हीं के माध्यम से किया करता था। औषध के रूप में न केवल पादप एवं जन्तु उत्पादों का ही प्रयोग किया जाता था, अपितु धातु भस्मों का भी प्रयोग किया जाता रहा है। मनुष्य ने औषधीशास्त्र कहाँ से सीखा? कैसे उसने जाना कि अमुक-अमुक वनस्पतियाँ हमारे काम की हैं? इस सम्बन्ध में मनुष्य ने पशुओं को अपना गुरू बनाया। उसने देखा कि पशुओं में एक प्रकृत्या प्रेरणा होती है, जिससे वे अपने कष्ट के समय अपने चारों ओर प्राप्त वनस्पतियों का सेवन करते हैं।[8] औषधियों के गुणों का ज्ञान पुरूषों को, पशु, पक्षी आदि प्राणियों से होता है। अथर्ववेद से अनेक औषधियों की जानकारी प्राप्त हुई है।[9] मंत्र का तात्पर्य यह नहीं है कि केवल मंत्र पढ़ने से ही रोगी अच्छे हो जाते थे प्रत्युत् औषधि सेवन के साथ मंत्र पढ़ने से उसकी शक्ति बढ़ जाती थी और रोगी पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव भी पड़ता था।[10] अथर्ववेदीय औषधि विज्ञान पर्याप्त विकसित था और यह दीर्घकालीन प्रयोग एवं अनुभव का परिणाम था।[11] अथर्ववेद में कहा गया है कि वनस्पतियों का पिता अंतरिक्ष तथा माता पृथ्वी है और इसके मूल समुद्र में रहते हैं।[12] अथर्ववेद के द्वितीय कांड का तृतीय सूक्त अतिसार तथा वृणादि (कैंसर) जैसे असाध्य रोगों की निष्क्रियता के लिए प्रयोजनीय बताया गया है।[13] अथर्ववेद में मूत्रघात रोग में शर तथा शलाका आदि द्वारा मूत्र को निकालने या भेदन करने का आदेश दिया गया है।[14] दु:ख प्रसव तथा विकृत-प्रसव के लिये योनि-भेदन करने का वर्णन मिलता है।[15]कष्टसाध्य लोहिनी और कृष्णा नामक अपची को किसी विशेष शर से भेदन करने के लिये उल्लेख प्राप्त होता है।[16] अपची को पकाने के लिये लवण का उपचार आदि शल्य-प्रक्रियाओं का वर्णन भी किया गया है।[17] अथर्ववेद में सम्पूर्ण सिर के रोगों तथा कान के रोगों को दूर करने का उल्लेख मिलता है।[18] कुष्ठ नामक औषधि को शीर्षामय तथा नेत्ररोगनाशक कहा गया है। नेत्र के रोगों के सम्बन्ध में अथर्ववेद में विभिक्त साधनों पर विचार किया गया है, कही जल-चिकित्सा, कही आजनमणि तो कही दिव्य सवर्ण के उपचार मिलते हैं।[19] गर्भाधान, गर्भ की पुष्टि, गर्भ की रक्षा, सुखप्रसव एवं जन्मकाल के अमांगलिक क्षणों में हानिकारक प्रभाव को दूर करने के लिए अनेक मंत्र अथर्ववेद में द्रष्टव्यहै।[20] कौशिक सूत्र की 35वीं काणि डका में पुंसवन संस्कार के लिये विधान बतलाये गये हैं।[21] अथर्ववेद में अगद-तंत्र से सम्बन्धित विषय जैसे- स्थावर और जंगम-विष, सर्प, वृश्चिक, विषाक्त कीटाणु तथा विषाक्त व्रण इत्यादि के विषय में मंत्र मिलते हैं।[22] विष को नष्ट करने के लिए कुछ वनस्पतियों से सम्बंधित मंत्र भी मिलते हैं।[23] कुछ मंत्रों में बतलाया गया है कि जल विभिक्त प्रकार के रोगों का औषध है तथा यह शारीरिक दोषों को दूर करके शरीर एवं त्वचा को सुस्थिर तथा स्वस्थ बनाता है।[24] अथर्ववेद में पुरूषत्व के विकास के लिये अनेक मंत्रों का विधान बतलाया है। कुछ मंत्रों में अश्व, हस्ति, गर्दभ और वृषभ-सदृश पुरूषत्व शक्ति के अर्जन के लिये प्रार्थना की गयी है।[25] अथर्ववेद में न केवल शारीरिक संरचना अपितु आयुर्वेद की विभिक्त शाखाओं का वर्णन मिलता है। उनका विश्लेषण करने पर कहा जा सकता है कि आदिकाल से ही मानव को चिकित्सा विज्ञान के बारे में जानकारी रही है, परन्तु आज की तुलना में इस क्षेत्र में अनुसंधानों का अभाव रहा जिसके कारण इस क्षेत्र में विशेष प्रगति नहीं हो पाई। अगर आयुर्वेद के बतलाये सूत्रें का प्रयोगशाला में परीक्षण संभव हो जाये तो यह ऐलोपैथी (आधुनिक चिकित्सा विज्ञान) से कारगर साबित हो सकती है।

शेष पृष्ठ 30 पर

we are determined to foment a rebellion and will not hold ourselves bound by any laws in which we have no voice or representation.

That your sex are naturally tyrannical is a truth so thoroughly established as to admit of no dispute ; but such of you as wish to be happy willingly give up - the harsh tide of master for the more tender and endearing one of friend. ...Men of sense in all ages abhor those customs which treat us only as the servants of your sex".

This is President John Adam's reply-

'...But your letter was the first intimation that another tribe, more numerous and powerful than all the rest, were grown discontented. ...We know better than to repeal our masculine systems. Although they are in full force, you know they are little more than theory, we dare not exert our power in its full latitude. We are obliged to go fair and soft and, in practice, you know we are the subjects.

We have only the name of masters, and rather than give up this, which would completely subject us to the despotism of the petticoat".

Appeal to median`

- Don't sensationalize the gender related issues, but sensitize the people. We need to change our mindset. Of course this sensitization has to be both ways, as gender sensitization is not a matter of choice for one-half.
- There is a big gap between the law regarding empowerment of women and the actual implementation of the law. And here media can play a socially responsible role by exposing the lapses and helping in bridging that gap.
- Another point to be noted here is that media and civil society are complementary to each other, and join hands in their efforts especially when it comes to fulfill their social obligations. Actually media constitute not only Fourth Estate and watchdog, but also functions as a civil society

Lastly, women must remember what Sarojini Naidu once said: 'Let women feel that what they are today is because they deserved it and not because they were given any special treatment". But still they have miles to go. They are equal in number. Why not equal in power?

References:-

1. Adams, John (2007); History Mail, 'The Sunday Indian', New Delhi, Jan. 21, p-7.
2. Enda, Jodi (2008), 'U.S. feminist movement undergoing generational shift', The Hindu(English daily), Oct. 22, New Delhi, p-14
3. Jensen, Klaus Bruhn (2005), (edited) A Handbook of media and Communication Research, Routledge, p-34
4. Kearney, M C (2006), 'Girls Make Media', New York, Routledge, 3-19
5. Kim, K H (2006), 'Obstacles to the success of female journalistsin Korea', Media, Culture and Society, 28(1), 123-141, London, Sage Publications
6. Pande, Mrinal (2007); 'Empowered Bimbos, 'The Sunday Indian', New Delhi, Jan. 21, p-74.

पृष्ठ 26 का शेष

उत्तर वैदिक काल में रोगों का उपचार न केवल जादू-टोनों से ही किया जाता था, अपितु औषधि के विभिन्न स्वरूपों का ज्ञान होने के कारण उनका प्रयोग भी किया जाता था। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि उत्तर वैदिक काल में दैव व्यपाश्रय चिकित्सा के स्थान पर युक्ति व्यपाश्रय चिकित्सा का अधिक विकास हुआ।

संदर्भः-

1. डॉ. कपिल देव द्विवेदी : 'वैदिक साहित्य एवं संस्कृति' विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, 2000 ई., पृ. सं. 97, 98
2. सायण, 'अथर्ववेद भाष्य भूमिका पृ.सं. 23
3. पंचवेदान् निरभिमीत - सर्ववेदम्, पिशाचवेदम्, असुरवेदम्, इतिहासवेदम्, पुराणवेदम् इति, गोपथ ब्राह्मण 1.1.10
4. दास गुप्त, डॉ. एस. एन., भारतीय दर्शन का इतिहास भाग-द्वितीय, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, राज0, 1973, 1989, पृ.सं. 231
5. वही, पृ.सं. 233
6. काणे, पी.वी., धर्मशास्त्र का इतिहास, भाग-5, हिन्दी समिति सूचना विभाग, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, पृ.सं. 4
7. शर्मा, डॉ. रामविलास, भारतीय संस्कृति और हिन्दी प्रदेश, किताबघर, नई दिल्ली, 1999, पृ.सं. 512,
8. डॉ. सत्यप्रकाश, वैज्ञानिक विकास की भारतीय परम्परा, पुस्तकायन, नई दिल्ली, 1991, पृ.सं. 219
9. विश्वकर्मा, डॉ. रामजीत, वैदिक साहित्य में शल्य चिकित्सा एक अध्ययन, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 2002, पृ.सं. 102,
10. वही, पृ.सं. 103,
11. वही, पृ.सं. 104
12. शर्मा, प्रो. प्रियव्रत, आयुर्वेद का वैज्ञानिक इतिहास, चौखम्भा ओरियन्टालिया, वाराणसी, 2005, पृ.सं. 35,
13. दीक्षित, डॉ. आशारानी, वैदिक वांग्मय में मंत्र-शक्ति और अभिचार, पैनमेन पब्लिशर्स, दिल्ली, 1997, पृ.सं. - 72,
14. वही, 1/3/1
15. वही, 1/11/1
16. वही, 7/74/1
17. वही, 7/76/1
18. वही, 9/8/1
19. वही, 19/35/3, 5/4/10, 5/4/2
20. वही, 5/25/1-3, 6/81/-1-3, 6/17/1-4, 1/11/1-6, 6/110/ 1-3 कौ. सू. 35/5
21. वही, 4/6/1-8, 4/7/1-7, 7/88/1
22. वही 2/27/2
23. वही, 3/7/5-7, 4/33, 6/22-24
24. वही, 4/4/8